‘बांग्ला नवजागरण का भारतेंदु युगीन साहित्य पर प्रभाव’

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

के अंतर्गत हिन्दी में पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–रूपरेखा

2013

निर्देशक
डॉ.आर.के. पाण्डेय
सहा. प्राध्यापक
शा.जे.योगानंदम् छत्तीसगढ़
महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सह–निर्देशक
डॉ. शीला दानी
कला एव वाणिज्य
कन्या महा. देवेन्द्र नगर,
रायपुर (छ.ग.)

शोध छात्रा
श्रीमती अपराजिता
जॉय नंदी

<u>शोध केन्द्र</u>

कला एवं वाणिज्य कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर,

रायपुर (छ.ग.)

1.	शोध प्रबंध का शीर्षक	:	'बांग्ला नवजागरण का भारतेन्दु युगीन साहित्य पर प्रभाव'
2.	विश्वविद्यालय	:	पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
3.	शोध केन्द्र	:	कला एवं वाणिज्य कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर, रायपुर (छ.ग.)
4.	विषय	:	हिन्दी साहित्य
5.	निर्देशक	:	डॉ.आर.के. पाण्डेय सहा. प्राध्यापक शा.जे.योगानंदम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
6.	सह–निर्देशक	:	डॉ. शीला दानी कला एवं वाणिज्य कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर, रायपुर (छ.ग.)
7.	शोध छात्रा	:	श्रीमती अपराजिता जॉय नंदी C/o राकेश गुप्ता, नूतन स्कूल के पास, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

<u>रूपरेखा के लिए प्रपत्र</u>

1. **शोध प्रबंध का शीर्षकः**

''बांग्ला नवजागरण का भारतेंदु युगीन साहित्य पर प्रभाव''

2. **परिचयः–**

नवजागरण के लिए अनेक समानार्थी शब्द जैसे पुनर्जागरण, पुनरूत्थान, पुनरूज्जवीन, नवजीवन, नवयुग व नवजागृति आदि का प्रचलन है । इसे फ्रांस में 'रेनासेंस' कहा जाता है । इस शब्द के लिए हिन्दी में मुख्य रूप से दो शब्दों नवजागरण एवं पुनर्जागरण का प्रयोग अधिक होता है । कुछ इतिहासकार इसके अर्थ को शिक्षा में नई भावना के समावेश से जोड़ते हैं । विशेष रूप से ग्रीक एवं लैटिन भाषा के विद्वान ऐसा ही मानते हैं । यूरोप में 15वीं एवं 16वीं शताब्दी में जो आंदोलन हुए थे, उस आंदोलन के फलस्वरूप यूरोप की मध्यकालीन व्यवस्था में परिवर्तन आया और इसी परिवर्तन को रेनासेंस कहा गया । इन आंदोलन के फलस्वरूप ही यूरोप में आधुनिक युग का सूत्रपात हुआ । इस युग ने मध्यकाल में व्याप्त निराशा के कवच को उतारकर मानवता को नई दिशा दी ।

आधुनिक युग के प्रारंभ के साथ ही यूरोप में नयी भावना का जन्म हुआ । यह एक नयी प्रकार की सभ्यता, नयी संस्कृति अथवा मानव मस्तिष्क को तिरोहित करने वाला एक नया दृष्टिकोण था, जिसने मध्यकाल की व्यवस्थाओं का उन्मूलन करके नवीन विचारों, नई खोजों

और नई व्यवस्थाओं को स्थापित करने की लालसा व्यक्त की । यही दृष्टिकोण यूरोप के इतिहास में आधुनिक युग का प्रतीक है । इस काल में यूरोप में दो ऐसी घटनाएं घटित हुई, जिन्होनें मानव जाति को मध्यकाल के घुटन भरे वातावरण से निकलकर आधुनिकता के चौराहे पर आकर खड़ा कर दिया तथा आगे की ओर बढ़ने का मार्ग दिखाया । ये घटनाएं थी पुनर्जागरण और धर्म सुधार आंदोलन। यूरोप की इन दोनों घटनाओं ने सभी क्षेत्र में उथल–पुथल मचा दिया । जिससे साहित्य का क्षेत्र भी अछूता न रहा । यूरोप में हुए नवजागरण का विश्व के सभी देशों पर प्रभाव देखने को मिला ।

भारत के संदर्भ में नवजागरण की शुरूआत 19वीं शताब्दी से मानी जाती है । नयी यूरोपीय वैज्ञानिक संस्कृति और पुरानी भारतीय धार्मिक संस्कृति की टकराहट के फलस्वरूप नवजागरण की शुरूआत बंगाल में हुई । इसका प्रभाव देश के विभिन्न क्षेत्रों पर भी पड़ा । यह कहा जा सकता है कि नवजागरण ने सामाजिक सांस्कृतिक ही नहीं अपितु साहित्यिक क्षेत्र को भी प्रभावित किया । जिसका विशेष प्रभाव बंगाल में देखा गया । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी नवजागरण की आधारशिला बंगाल में माना है । 1857 की विफल क्रांति के फलस्वरूप लोगों में जो निराशा की मनःस्थिति थी जिसका प्रभाव बंगाल में विशेष रूप से देखा गया और यही प्रभाव हिन्दी नवजागरण के बीज को अकुंरित किया । हिन्दी नवजागरण का उत्थान बंगाल से होते हुए संपूर्ण भारत में व्याप्त रूप से प्रसारित करने में भारतीय साहित्यकारों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है,

उसमें हिन्दी नवजागरण के जुझारू साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र के साथ उनके समसामयिक साहित्यकारों का योगदान प्रमुख रहा ।

भारतेन्दु युग हिन्दी नवजागरण का युग है । भारतेन्दु युग ही रीतिकाल के पश्चात् आधुनिक हिन्दी कविता का वह पड़ाव है, जहाँ भक्ति को देश भक्ति से जोड़ा, जिसमें प्रमुख कवियों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साथ प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास, ठाकुर जगमोहन सिंह की कविताएं राष्ट्रीय भावना और देश भक्ति से पूर्ण है । नवजागरण के रूप में भारतेन्दु की 'विजयिनी विजय बैजयन्ती' प्रेमधन की 'आनंद अरूणोदय' प्रतापनारायण मिश्र की 'महापूर्व' और 'नया संवत्' शीर्षक कविताएं प्रेरणादायी रहीं, जिसमें देशभक्ति के साथ व्यंग्य भी दृष्टिगत होते हैं । इस प्रकार भारतेन्दु युग के साहित्यकारों के साथ स्वयं भारतेन्दु ने देश की सामाजिक समस्याओं को अपने काव्य से जोड़कर नवजागरण का संदेश दिया । नारी शिक्षा, विधवाओ की दुर्दशा, अस्पृश्यता आदि को अपने काव्य का माध्यम बना कर सहानुभूति प्रदर्शित की ।

भारतेन्दु ने समकालीन समाज में व्याप्त 'भारत दुर्दशा' नाटक में अनेक सामाजिक समस्याओं को उकेरकर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम की भावना को जागृत कर देश के प्रति उनके स्वाभिमान को जागकर नवजागरण का सशक्त संदेश दिया । हिन्दी नवजागरण के सशक्त माध्यम के रूप में साहित्यकारों ने आधुनिक चेतना व नवीन संवेदना से युक्त करने के लिए नाटक और पत्रकारिता का सहारा लिया । उन्होनें कविताएं, निबंध, व्याख्यान तथा पत्रपत्रिकाएं आदि माध्यमों का सहारा लेकर देशभक्ति एवं राजभक्ति के प्रति रूचि जागृत कर अपनी

अभिव्यक्ति को व्याप्त किया । इनमें विशेष रूप से पत्र–पत्रिकाओं का नवजागरण में विशेष योगदान रहा ।

3. इस क्षेत्र में किए गए पूर्व–कार्य का संक्षिप्त विवरणः–

हिन्दी के क्षेत्र में मेरी जानकारी के अनुसार अब तक कोई भी ऐसा कार्य प्रकाश में नहीं आया है, जिसने भारतेन्दुयुगीन साहित्य पर बांग्ला नवजागरण के प्रभाव को गहन एवं व्यापक रूप से विश्लेषित–विवेचित किया गया हो । भारतेन्दु युगीन साहित्य को सम्यक रूप से समझने के लिए उस पर पूर्ववर्ती एवं समकालीन प्रभावों का अध्ययन अनिवार्य है, क्योंकि यही भारतेन्दुयुगीन साहित्य हिन्दी के परवर्ती विकास की आधारशिला है ।

पूर्व कार्य के रूप में भारतीय नवजागरण एवं हिन्दी नवजागरण से संबंधित अन्य कार्य इस प्रकार है जिनसे प्रस्तावित शोध के संपादन में दिशा–निर्देश मिल सकता है यथाः–

1. 'आधुनिक भारतीय नवजागरण के संदर्भ में निराला के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अनुशीलन' श्रीमती शीला वाजपेयी, शा.कला एवं विज्ञान महाविद्यालय दुर्ग, 1985
2. 'भारतीय नवजागरण और मैथिलीशरण गुप्त' कु. किरण अग्रवाल, शा. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, दुर्ग, 1987
3. 'उत्तर भारतेन्दुयुगीन हिन्दी साहित्य के परिपेक्ष्य में पं. सुंदरलाल शर्मा का संपूर्ण रचनाधर्मिता का मूल्यांकन' श्रीमती सविता मिश्रा, शा.दू.ब. महिला महाविद्यालय, रायपुर, 1994

4. 'हिन्दी नवजागरण में माधवराव सप्रे का योगदान' श्री रमेश अनुपम, साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, 2005

5. 'भारतीय नवजागरण के संदर्भ में हिन्दी और बंगला साहित्य, चंद्र मुखर्जी, हैदराबाद विश्वविद्यालय, 2011

4. उद्देश्यः–

यूरोप नवजागरण का सीधा प्रभाव हिन्दी साहित्य पर नहीं पड़ा । उसका भारतीयकरण प्रथमतः बांग्ला साहित्य में हुआ । जिससे हिन्दी साहित्य में नवजागरण का सूत्रपात हुआ । हिन्दी नवजागरण से बांग्ला के इस अंतर्संबंध स्थापित करते हुए कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ । अतः इस तथ्यों को स्थापित करना इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है ।

5. प्रस्तावित कार्य में उल्लेखनीय योगदानः–

प्रस्तावित विषय पर अपेक्षाकृत बहुत ही कम शोध कार्य हुए हैं। बांग्ला नवजागरण के प्रभाव को तथा बांग्ला समाज को कोई बांग्ला भाषी ही समझ सकता है। इस तरह बांग्ला नवजागरण के प्रभाव को भारतेन्दु युगीन साहित्य में देखने का प्रयास करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण योगदान है, जिसके माध्यम से समूचे बंगाल के नवजागरण को विश्लेषित करने का प्रयास करना तथा उसके प्रभाव को भारतेंदुयुगीन साहित्य पर देखने का प्रयत्न करना एक महत्वपूर्ण योगदान के दिशा में सार्थक पहल है।

6. प्रस्तावित शोध प्रविधिः–

प्रस्तुत शोध विषय में पुस्तकालयों, इंटरनेट, संदर्भ ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाओं आदि की सहायता लेते हुए वस्तुतथ्यात्मक अनुसंधान तथा प्रवृत्ति मूलक अनुसंधान प्रणाली द्वारा शोध कार्य के उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है तथा आवश्यकतानुसार भारतेन्दुयुगीन साहित्य से संबंधित सामग्री ग्रहण किए जा सकते हैं ।

(शोध प्रबंध को अध्यायों में विभक्त करने वाली प्रस्तावित रूपरेखा संलग्न है)

'बांग्ला नवजागरण का भारतेन्दु युगीन साहित्य पर प्रभाव'

प्रस्तावनाः–

अध्याय–1 नवजागरण अर्थ, व्याप्ति, उद्‌भव, विकास एवं प्रसार

1.1 नवजागरणःअर्थ एवं व्याप्ति

1.2 नवजागरण पूर्व यूरोप

1.3 यूरोप में नवजागरण

1.4 यूरोप के नवजागरण का संपूर्ण विश्व पर प्रभाव

अध्याय–2 बांग्ला नवजागरण और बांग्ला समाज

2.1 बंगालः ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

2.2 नवजागरण पूर्व बंगाल

2.3 बंगाल में नवजागरण

2.4 बांग्ला नवजागरण का बांग्ला समाज पर प्रभाव

2.5 बांग्ला नवजागरण का भारत के विभिन्न प्रांतों पर प्रभाव

अध्याय–3 बांग्ला नवजागरण और हिन्दी समाज

3.1 हिन्दी समाजः ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

3.2 नवजागरण पूर्व हिन्दी समाज

3.3 बांग्ला नवजागरण का हिन्दी समाज पर प्रभाव

3.4 19वीं शताब्दी और हिन्दी नवजागरण

अध्याय–4 हिन्दी नवजागरण और भारतेन्दु हरिश्चंद्र

4.1 भारतेन्दु हरिश्चंद्र का व्यक्तित्व एंव कृतित्व

4.2 बांग्ला नवजागरण का भारतेन्दु हरिश्चंद्र पर प्रभाव

4.3 भारतेन्दु हरिश्चंद्र के साहित्य में नवजागरण का स्वरूप

4.4 भारतेन्दु हरिश्चंद्र के साहित्य में नवजागरण की प्रमुख प्रवृत्तियां

अध्याय–5 हिन्दी नवजागरण और भारतेंदु युगीन साहित्य

5.1 भारतेंदु युग और उनके समसामयिक साहित्यकारों का परिचय

5.1.1. प्रतापनारायण मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

5.1.2 बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

5.1.3 बालकृष्ण भट्ट का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

5.1.4 राधाचरण गोस्वामी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

5.2 भारतेंदु युगीन साहित्य पर भारतेंदु हरिश्चंद्र का प्रभाव

5.3 भारतेन्दु युगीन साहित्य का हिन्दी नवजागरण में योगदान

उपसंहार –

समग्र मूल्यांकन

साहित्यिक प्रदेय

निष्कर्ष

परिशिष्ट–1

परिशिष्ट–2

7. प्रस्तावित कार्य का संभावित निष्कर्षः–

बांग्ला नवजागरण तथा हिन्दी नवजागरण के प्रभावों से जो संभावित निष्कर्ष है, वह इस प्रकार से हैः–

1. बांग्ला नवजागरण का भारतेंदु युगीन साहित्य पर प्रभाव
2. बांग्ला नवजागरण और यूरोप के नवजागरण में अंतर

3. बांग्ला नवजागरण एवं हिन्दी नवजागरण में मूलभूत अंतर

4. भारतेंदु युगीन नवजगारण का परवर्ती हिन्दी साहित्य के विकास में योगदान

8. आधार ग्रंथ सूची (मानक प्रारूप में):–

- आचार्य देवेश कुमार, (2009), 'बांग्ला साहित्य का इतिहास', यूनाईटेड बुक एजेन्सी, कलकत्ता
- घोष विनय, (2009), 'बंगाल की नवजागृति', (2011) 'विद्यासागर एवं बंगाली समाज'
- पाठक गजेन्द्र, (2005), 'हिन्दी नवजागरण', विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- शिशिर कर्मेन्दु, (2000) 'नवजागरण और संस्कृति', आधार प्रकाशन, हरियाणा
- त्रिपाठी राममूर्ति, (2003) 'नवजागरण भारतेंदु और गुप्त जी', केशव प्रकाशन इलाहबाद

संदर्भ–ग्रंथ सूची (मानक प्रारूप में):

- कवडे चंद्रदेव, (1975) 'भारतेंदु पूर्व हिन्दी गद्य', पुस्तक संस्थान, कानपुर
- खन्ना कैलाश, (2003) 'यूरोप का इतिहास', अर्जून पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- गुप्त मानिक लाल, (2006), 'यूरोप का इतिहास' (1453–1789), साहित्य रत्नालय, कानपुर
- त्यागी एम.एस, (2002) 'यूरोप का इतिहास' (1453–1789), राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
- डॉ. नागेन्द्र, (2004) 'भारतीय साहित्य', प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली
- भावुक कृष्ण, (2009) '1857 का प्रथम स्वातन्त्र्य समर और हिन्दी काव्य', के.के. पब्लिकेशन नई दिल्ली

- भटनागर रामरतन, (1965), 'निराला और नवजागरण', साथी प्रकाशन सागर म.प्र.
- मोहम्मद मलिक, (1977), 'हिन्दी साहित्य को हिन्दीत्तर प्रदेशों की देन' राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
- वर्मा दीनानाथ, (2007), 'आधुनिक यूरोप का इतिहास', ज्ञानदा प्रकाशन नई दिल्ली
- विश्वास दिलीपकुमार, (1983), 'राममोहन राय समीक्षा', सारस्वत लाइब्रेरी , कलकत्ता
- वागल योगेशचंद्र, (2011), '19वीं शताब्दी का बांग्ला', विवेकानंद बूक सेन्टर, कलकत्ता
- वंद्योपाध्याय प्रणव कुमार, (2002) 'प्रसंग रामविलास शर्मा', शिलालेख प्रकाशन दिल्ली
- डॉ. शंभुनाथ, (1993), 'दूसरे नवजागरण की ओर' ज्ञान भारतीय प्रकाशन दिल्ली, (2004), 'हिन्दी नवजागरण और संस्कृति' आनंद प्रकाशन कलकत्ता, (2006), 'सामाजिक क्रांति के दस्तावेज' भागः1–2 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
- शर्मा हरिचरण, (2007) 'हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल', मलिक एण्ड कंपनी, जयपुर
- शास्त्री शिवनाथ, (2009) 'रामतनू लाहिड़ी एवं तत्कालीन बंग समाज', न्यू एज पब्लिकेशन प्रा. लि. कलकत्ता
- शर्मा रामविलास, (1977) 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण', राजकमल प्रकाशन दिल्ली, (2006), 'भारतीय साहित्य की भूमिका' राजकमल प्रकाशन दिल्ली
- सिंह गिरिश कुमार, (2008) 'यूरोप का इतिहास' (1453–1870), ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली
- त्रिपाठी प्रीति, (2005) 'यूरोप का इतिहास' (1789–1870), विकास प्रकाशन कानपुर

पत्र–पत्रिकाएँ :–

- त्रिवेदी सुशील, (2013) 'छत्तीसगढ़ मित्र' साहित्य और समालोचना का मासिक पत्रिका, वैभव प्रकाशन रायपुर (छ.ग.)

शोध प्रबंध :–

- अनुपम रमेश, (2005), 'हिन्दी नवजागरण में माधवराव सप्रे का योगदान', पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर,

  [पं. रविशंकर शुक्ल द्वारा स्वीकृत पी–एच.डी. शोध प्रबंध (अप्रकाशित)]
- अग्रवाल किरण, (1987), 'भारतीय नवजागरण और मैथिलीशरण गुप्त' शा. कला/विज्ञान महाविद्यालय, दुर्ग

  [पं. रविशंकर शुक्ल द्वारा स्वीकृत पी–एच.डी. शोध प्रबंध (अप्रकाशित)]
- मुखर्जी चंद्र, (2011), 'भारतीय नवजागरण के संदर्भ में हिन्दी और बंगला साहित्य' हैदराबाद विश्वविद्यालय

  [हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत पी–एच.डी. शोध प्रबंध (अप्रकाशित)]
- मिश्रा सविता, (1994), 'उत्तर भारतेन्दु युगीन हिन्दी साहित्य के परिपेक्ष्य में पं. सुंदरलाल शर्मा के संपूर्ण रचनाधार्मिता का मूल्यांकन'

  [पं. रविशंकर शुक्ल द्वारा स्वीकृत पी–एच.डी. शोध प्रबंध (अप्रकाशित)]
- वाजपेयी शीला, (1985), 'आधुनिक भारतीय नवजागरण के संदर्भ में निराला के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अनुशीलन', शा. कला/विज्ञान महाविद्यालय, दुर्ग

  [पं. रविशंकर शुक्ल द्वारा स्वीकृत पी–एच.डी. शोध प्रबंध (अप्रकाशित)]

9. प्रत्याशी द्वारा प्रकाशित शोधपत्रों की सूचीः–

(i) 'भारतेन्दु के साहित्य पर नवजागरण का प्रभाव'

निदेशक	सह–निर्देशक	शोध छात्रा
डॉ.आर.के. पाण्डेय सहा. प्राध्यापक शा.जे.योगानंदम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)	डॉ. शीला दानी कला एवं वाणिज्य कन्या महा. देवेन्द्र नगर, रायपुर (छ.ग.)	श्रीमती अपराजिता जॉय नंदी

अग्रेषित

अध्यक्ष

विभागीय शोध–समिति

शोध निर्देशक के प्रकाशित शोध–पत्रों का विवरण

1.	हिन्दी का प्रथम विज्ञान काव्य – पृथ्वीकल्प	–	डॉ. आर.के. पाण्डेय, डॉ. आर.के. दुबे छत्तीसगढ़ विवके, अंक–उन्नीस
2.	मुक्तिबोध की भाषा : छिटपुट संदर्भ	–	अप्रेल जून–2010 डॉ. आर.के. पाण्डेय श्रीमती तारा त्रिपाठी शोध प्रकल्प, Volume LV Number-02, April June-2011
3.	मुक्तिबोध की जीवन दृष्टि मूलभूत मान्यताएँ	–	डॉ. आर.के. पाण्डेय, श्रीमती तारा त्रिपाठी, शोध प्रकल्प, Volume LV Number-02, April June-2011
4.	क्या कहकर पुकारूँ और सर्वेश्वर का प्रेम	–	डॉ. आर.के पाण्डेय, श्रीमती आशा पाठक शोध प्रकल्प, अंक–49, संख्या–04, अक्टूबर–दिसम्बर
5.	भारतीय बोध और वर्तमान मीडिया	–	डॉ. आर.के. पाण्डेय, डॉ. आर.के. दुबे, छत्तीसगढ़ विवेक, वर्ष–09, अंक–28, जनवरी–मार्च 2010
6.	सूर्यबाला के कथा साहित्य का कथ्य एवं शिल्प	–	डॉ. आर.के. पाण्डेय, कु. उर्वशी कुर्रे शोध संकल्प, वर्ष–2012, Volume-02 May-July 2012

7. ममता कालिया के उपन्यासों का कथ्य एवं भाषा – डॉ. आर.के पाण्डेय, श्रीमती स्मिता जायसवाल शोध संकल्प, वर्ष 2012, Volume-02 May-July 2012

8. जया जादवानी और उनका कथा साहित्य – डॉ. आर.के. पाण्डेय, प्रभा कौशिक, शोध प्रकल्प, Volume-LX1 Number-4, Oct.-Dec.- 2012